अभ्यास पत्रक

पाठ – राम लक्ष्मण परशुराम संवाद

नाम :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

प्रश्न 1: काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) (1×5 = 5 अंक)

सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने।
बोले परसुधरहि अवमाने।
बहु धनुही तोरी लरिकाईं।
कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥

1. लक्ष्मण जी किस बात पर मुस्कराते हैं?
   (क) परशुराम जी की क्रोधपूर्ण बातों पर (ख) सभा की चुप्पी पर
   (ग) राम जी के संकेत पर (घ) धनुष टूटने पर
2. 'परसुधर' किसे कहा गया है?
   (क) लक्ष्मण (ख) विश्वामित्र (ग) परशुराम (घ) राम
3. "बहु धनुही तोरी लरिकाईं" में लक्ष्मण किस बात का संकेत कर रहे हैं?
   (क) वे शिव धनुष तोड़ने से डर गए (ख) उन्होंने बचपन में कई धनुष तोड़े हैं
   (ग) वे राम को दोषी मानते हैं (घ) उन्होंने परशुराम से माफी माँगी
4. गोसाईं शब्द का सामान्य अर्थ क्या है?
   (क) मुनि (ख) सेनापति (ग) राजा (घ) सेवक
5. इस काव्यांश में लक्ष्मण जी का कौन-सा भाव प्रकट होता है?
   (क) क्रोध (ख) विनम्रता (ग) व्यंग्य (घ) आशंका

प्रश्न 2: रिक्त स्थानों की पूर्ति करें – (1×2 = 2 अंक)

1. परशुराम जी ने कहा – "धनुही सम _____ बिदित सकल संसार।"
2. लक्ष्मण जी ने कहा – "_____ सम बचनु तुम्हारा, व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।"

प्रश्न 3: लघु उत्तरीय प्रश्न (30 शब्दों में उत्तर दें) (4 में से कोई 3 करें) – (3×2 = 6 अंक)

1. परशुराम जी किस कारण शिव धनुष को तोड़े जाने पर इतना क्रोधित हो जाते हैं?

उत्तर - .....
.....
.....
.....

2. लक्ष्मण जी परशुराम जी को "गृहस्थ योद्धा" कहकर व्यंग्य क्यों करते हैं?

उत्तर - .....
.....
.....
.....

3. लक्ष्मण जी ने परशुराम जी के 'ऋण' का विषय उठाकर क्या संकेत दिया?

उत्तर - .....
.....

egyanarchive

……
……

4. विश्वामित्र जी की भूमिका इस संवाद में कैसी रही?

उत्तर - ……
……
……
……

प्रश्न 4: निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – (1×4 = 4 अंक)

(क) *बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥*
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥

(ख) *सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।*
बिद्यमान रन पाइ रिपु, कायर कथहिं प्रतापु॥

उत्तर - ……
……
……
……
……
……
……
……
……

प्रश्न 5: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (1×8 = 8 अंक) *उत्तर सीमा: 80–100 शब्द*

प्रश्न: "राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद" में लक्ष्मण जी की वाणी जहाँ एक ओर व्यंग्यपूर्ण है, वहीं दूसरी ओर साहस, चतुराई और मर्यादा की झलक भी देती है। इस कथन की पुष्टि पाठ के उदाहरणों सहित कीजिए।

उत्तर - ……
……
……
……
……
……
……
……
……
……
……
……

egyanarchive

उत्तर कुंजी

प्रश्न 1 – MCQ उत्तर:

1. (अ) परशुराम जी की क्रोधपूर्ण बातों पर
2. (ग) परशुराम
3. (ख) उन्होंने बचपन में कई धनुष तोड़े हैं
4. (अ) मुनि
5. (ग) व्यंग्य

प्रश्न 2 – रिक्त स्थान उत्तर:

1. त्रिपुरारिधनु
2. कोटि कुलिस

प्रश्न 3 – लघु उत्तरीय उत्तर:

1. क्योंकि शिव उनके आराध्य हैं और उनके धनुष को कोई भी अपमानित नहीं कर सकता – यह उनका अहं और आस्था का प्रश्न है।
2. लक्ष्मण जी तंज कसते हैं कि परशुराम जी केवल घर में ही वीरता दिखा सकते हैं, युद्धभूमि में नहीं।
3. उन्होंने परशुराम जी से कहा कि वे गुरु ऋण चुकाना चाहते हैं तो वे 'थैली खोलकर' भुगतान को तैयार हैं – यह तीखा व्यंग्य है।
4. विश्वामित्र जी ने बार-बार परशुराम और लक्ष्मण दोनों को शांत करने का प्रयास किया; वे विवेक और संतुलन का पक्ष हैं।

प्रश्न 4 – व्याख्या संकेत:

(क)

लक्ष्मण जी व्यंग्यपूर्वक कहते हैं कि परशुराम बार-बार फरसा दिखा रहे हैं, मानो फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। वे उन्हें महायोद्धा मानने से इंकार करते हैं।

(ख)

यह दोहा वीरता और अहंकार में अंतर दर्शाता है। लक्ष्मण कहते हैं कि असली योद्धा अपनी वीरता का प्रदर्शन युद्ध में करता है, न कि वाणी से।

प्रश्न 5 – दीर्घ उत्तर संकेत:

- लक्ष्मण जी का व्यक्तित्व साहसी, स्पष्टवादी और व्यंग्य-प्रधान है।
- वे अपनी वाणी से परशुराम को तर्क और व्यंग्य से निरुत्तर करने की कोशिश करते हैं।
- वे भृगुवंशी को ब्राह्मण जानकर संयम भी बरतते हैं।
- गुरु ऋण, जनेऊ, युद्धभूमि जैसे विषयों से वे परशुराम पर सीधा व्यंग्य करते हैं।
- फिर भी श्री राम का शांत स्वरूप लक्ष्मण के विपरीत दिखाई देता है।

eGyanarchive